❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।।

सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your devotees.

वर्ष 40, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 मई, 2017 से रविवार 14 मई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास

अण्डमान निकोबार के पोर्ट ब्लेयर में आर्य समाज की स्थापना की ओर महत्त्वपूर्ण कदम

महर्षि दयानन्द की विचारधारा – मानव को वैज्ञानिक सोच प्रदान करती है – प्रो. जगदीश मुखी

पोर्ट ब्लेयर में आर्यसमाज की स्थापना होना हम सब के लिए गौरव की बात – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज के विस्तार सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का कार्य – महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच.

आज से 60 वर्ष पूर्व उर्दू का सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मैं महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा की ओर प्रेरित हुआ और अब आर्य समाज के संगठन की जो नींव पोर्ट ब्लेयर में रखी गई है उसको आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास करूंगा
– हरिनारायण अरोड़ा, संरक्षक, आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर

महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्यसमाज की स्थापना करते समय कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, उसकी अनुपालना में आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के एक सुदूर स्थित प्रान्त अन्दमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में आर्यसमाज की एक इकाई की स्थापना हेतु एक महत्त्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाते हुए सार्वदेशिक सभा की ओर से मान्यता देकर एक समिति का निर्माण किया गया है। समस्त आर्यजनों के लिए यह एक उत्साहजनक समाचार है।

ज्ञातव्य है कि सुप्रसिद्ध समाज सुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की स्थापना 1875 में मुम्बई में की थी। उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज की यह विचारधारा सारे संसार में फैले। उसके लिए उन्होंने अल्प साधनों से जितना प्रयास किया जा सकता था किया। दुर्भाग्य से उनका निधन एक षड़यन्त्र के चलते स्थापना के 8 वर्ष बाद 1883 में हो गया।

किन्तु उनके कार्यों की तेजस्विता के चलते

आर्यसमाज का विस्तार होता चला गया और शीघ्र ही आर्यसमाज भारत के लगभग हर हिस्से में स्थापित हो गया। 25 देशों में तो आर्यसमाज 1920 तक ही पहुंच चुका था और विस्तार चल रहा था। किन्तु किन्हीं कारणों से भारत के कुछ क्षेत्र आर्यसमाज की विचारधारा और

– शेष पृष्ठ 4 पर

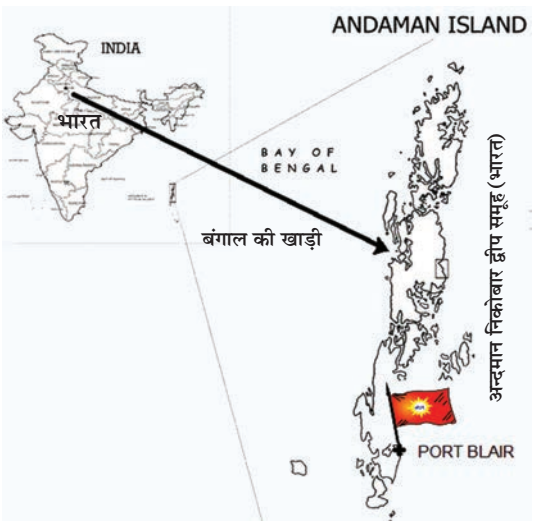

(बाएं) आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर की विधिवत् स्थापना के अवसर पर पारिवारिक सत्संग एवं बैठक के उपरान्त आर्यसमाज के अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों के साथ सामूहिक चित्र। (दाएं) आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर के अधिकारियों के साथ अन्दमान निकोबार द्वीप समूह के उपराज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी से भेंट के लिए दिल्ली से पहुंचा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधि मंडल। इस अवसर पर प्रो. जगदीश मुखी जी को महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, श्री एस. के. कोचर एवं आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर के प्रधान डॉ. सुरेश चतुर्वेदी, मन्त्री श्री सुरेश कुमार आर्य एवं अन्य सदस्यगण

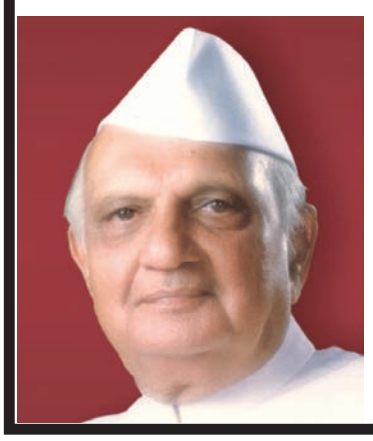

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के पूर्व प्रधान सेठ प्रताप सिंह सूरजी वल्लभदास जी का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान सेठ प्रताप सिंह सूरजी वल्लभदास जी का दिनांक 6 मई को उनके मुम्बई निवास पर 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र–पौत्र–प्रपौत्रों से भरा–पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 मई, 2017 को रामावातुमल हॉल, के.सी. कॉलेज, चर्चगेट मुम्बई में 5–7 बजे तक सम्पन्न हुई, जिसमें आर्यसमाज के अनेक पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री प्रताप सिंह जी का जन्म 16 जुलाई, 1918 को हुआ था। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे आर्यसमाज की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1963 से 1970 तक यशस्वी प्रधान रहे। आपके नेतृत्व में मॉरीशस में आयोजित 12वां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, देश विदेश समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों एवं एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से दानवीर, समाजसेवी, शिक्षाविद सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

वेद-स्वाध्याय

मैं क्या हूँ?

न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि।
यदामागन्प्रथमजा ऋतस्य आदिद् वाचो अश्नुवे भागमस्याः।। अथर्व. 9/10/15
ऋषिः **दीर्घतमाः।।** देवता - **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - यदि वा इदमस्मि=मैं यह हूँ या नहीं, क्या हूँ, **न विजानामि**= यह कुछ जान नहीं पाता, **निण्यः**= दबा हुआ, **सन्नद्धः** = पूरी तरह बँधा हुआ **मनसा चरामि**= संशयित मन से फिरता हूँ। **यदा** = यदि **मा** = मुझे **ऋतस्य प्रथमजाः** = सम्यस्वरूप की प्रथमोत्पन्ना बुद्धि **आगन्**= प्राप्त हो जाए **आत् इत्**=तो मैं **अस्याः वाचः भागम्**= वाणिमात्र के प्रतिपाद्य विषय को **अश्नुवे**=पा जाऊँ।

विनय - मैं क्या हूँ? क्या मैं यह शरीर हूँ? इसमें चेतना कहाँ से आई है? मैं कया वास्तव में अमर हूँ? यह कुछ समझ में नहीं आता। या क्या मैं बिल्कुल परिस्थितियों का गुलाम हूँ। परिमितता के इन बन्धनों से क्या मैं कभी छूट सकता हूँ। यह संसार किसलिए है? किधर जा रहा है? मेरा इससे क्या सम्बन्ध है? कुछ नहीं समझ पाता। हमारे दर्शनों में कोई कुछ कहता है और कोई कुछ। उधर पश्चिम के दार्शनिक कुछ, और वैज्ञानिक कुछ कहते हैं। मैं अपने को सब ओर से बँधा हुआ अनुभव करता हूँ; संशयों से दबा हुआ-इधर-उधर भटकता फिरता हूँ; पर ज्ञानतृप्ति कहीं नहीं होती। कहते हैं कि जब 'ऋतंभरा प्रज्ञा' का उदय हो जाता है तब कोई संशय नहीं रहता। उसके प्रकाश में प्रत्येक वस्तु बिल्कुल यथावत् दिखाई देती है; वहाँ संशय और भ्रम हो ही नहीं सकता। वह यौगिक प्रत्यक्ष है,[1] उससे प्रत्येक तत्त्व का साक्षात्कार, प्रत्यक्ष हो जाता है। अहां! यदि वह 'ऋतंभरा प्रज्ञा'[2] मुझे प्राप्त हो जाए तो संसार की वाणियाँ, वेद-शास्त्र, दर्शन (Philosophies) और विज्ञान (Science) जो कुछ कहते हैं, उस सबका मतलब हल हो जाए। ये भिन्न-भिन्न वाणियाँ, सब नव्य और पुरातन ग्रन्थ जो कुछ कहते हैं, उनकी प्रतिपादित वस्तु मिल जाए। फिर ये परस्पर-विरुद्ध दीखने वाले शास्त्रवचन मुझे बहका न सकेंगे। बस, वह ऋतंभरा प्रज्ञा, वही चाहिए-और कुछ नहीं चाहिए। वही मेरे इस भयंकर संनिपात रोग का एकमात्र इलाज है। मुझे उसके बिना अब किसी सांसारिक ज्ञान से चैन नहीं मिल सकता। आह! ऋतंभरा प्रज्ञा! ऋतंभरा प्रज्ञा!! उसी के लिए हैं मेरे सारे यत्न!

1. **''ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा''।।**
''श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात्''।।
-योगदर्शन 1/47-48
2. **ऋतं सत्यमेव बिभर्तीति ऋतम्भरा।**

-: साभार :-
वैदिक प्रकाशन

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या यूरोप अपने अन्त के निकट है?

संस्कृति और सभ्यता के चिन्तक, विचारक कहते हैं कि सभ्यताएं बचती नहीं हमेशा बचाई जाती हैं, इनका रख-रखाव बच्चे के लालन-पालन की तरह होता है। जो इनसे मुंह मोड़ता उसे इसके दुखद परिणाम भुगतने पड़ते हैं। ऐसा नहीं कि यह सिर्फ अनुमान है वरन इसके उदहारण भी हमारे समक्ष प्रस्तुत है। रोमन साम्राज्य हो, या मिस्र की सभ्यता या फिर भारतीय उप-महाद्वीप में सिंधु घाटी की सभ्यता। ये इंसान की तरक्की की बड़ी मिसालें थीं। मगर इन सबका पतन हो गया। मुगल साम्राज्य जो कभी मध्य एशिया से लेकर दक्षिण भारत तक पर राज करता था वह खत्म हो गया। वह ब्रिटिश साम्राज्य जहां कभी सूरज अस्त नहीं होता था, वह भी एक वक्त ऐसा आया कि मिट गया। आज अमरीका की अगुवाई वाले पश्चिमी देश जिस तरह की चुनौतियां झेल रहे हैं, उस वजह से अब पश्चिमी सभ्यता के किले के ढहने की आशंका जताई जा रही है। यहाँ आकर सवाल उपजता है कि यूरोप की सभ्यता सिमट गयी तो किस सभ्यता का राज होगा? अमेरिकी विचारक मार्क स्टेयन ने इससे आगे बढ़कर भी कहा है पश्चिमी विश्व 21वीं शताब्दी तक बच नहीं पायेगा और हमारे समय में यदि पूरा यूरोप नहीं तो यूरोप के कुछ देश अवश्य अदृश्य हो जायेंगे।

इस विषय में संक्षेप में चर्चा के साथ पहला तर्क यह दर्शाता है कि मुसलमानों की सक्रियता और यूरोप की निष्क्रियता के कारण यूरोप का इस्लामीकरण होगा और अपने धार्मिक स्तर के साथ वह इस्लाम में धर्मान्तरित हो जायेगा। उच्च और निम्न जन्म दर तथा उच्च और निम्न सास्कृतिक आत्मविश्वास धार्मिकता के कारण यह सम्भव होगा। कहने का अर्थ है कि आज यूरोप एक खुला द्वार है जिसमें मुसलमान टहल रहे हैं। आज यूरोप की सेक्यूलरिज्म के प्रति गहरी आसक्ति के कारण ही चर्च खाली रहते हैं। एक शोधकर्ता के अनुसार लन्दन में शुक्रवार को मस्जिदों में मुसलमानों की संख्या रविवार को चर्च में आने वालों से अधिक होती है जबकि लन्दन में ईसाइयों की संख्या मुसलमानों से 7 गुना अधिक है।

हम यह चर्चा किसी को भय दिखाने या किसी की हिम्मत बढ़ाने के लिए नहीं कर रहे बल्कि समय के साथ सचेत करने के लिए कर रहे हैं। कारण मध्य एशिया का हिंसक वर्तमान आज किसी से छिपा नहीं है। जो अब धीरे-धीरे यूरोप की तरफ बढ़ रही है। कोई भी सभ्यता चाहे कितनी ही महान क्यों न रही हो, वह, वक्त आया तो खुद को तबाही से नहीं बचा पाई। आगे चलकर क्या होगा, ये पक्के तौर पर तो कहना मुमकिन नहीं। मगर ऐतिहासिक अनुभव से हम कुछ अंदाज तो लगा सकते हैं। भविष्य के सुधार के लिए कई बार इतिहास की घटनाओं से भी सबक लिया जा सकता है। पश्चिमी देश, रोमन साम्राज्य से सबक ले सकते हैं। यदि आज पश्चिमी देश आर्थिक घमंड में जी रहे है तो उन्हें यह भी सोचना होगा कि संसाधनों पर बढ़ते बोझ के कारण कब तक इसे सम्भाल पाएंगे। दूसरा कुदरती संसाधनों पर उस सभ्यता का दबाव और तीसरा सभ्यता को चलाने का बढ़ता आर्थिक बोझ और चौथा बढ़ता मुस्लिम शरणार्थी संकट कब तक सहन करेंगे?

यूरोप और इस्लामी दुनिया की समझ रखने वाले लेखक विचारक डेनियल पाइप्स इस पर अपनी राय बड़ी संजीदगी से रखते हुए कहते है कि मुसलमानों की उत्साही आस्था, जिहादी सक्षमता और इस्लामी सर्वोच्चता की भावना से यूरोप की क्षरित ईसाइयत से अधिक भिन्न है। इसी अन्तर के चलते मुसलमान यूरोप को धर्मान्तरण और नियन्त्रण के परिपक्व महाद्वीप मानते हैं। डेनियल कुछेक मुस्लिम धर्म गुरुओं के अहंकारी सर्वोच्च भाव से युक्त दावों के उदाहरण सामने रखते है जैसे उमर बकरी मोहम्मद ने कहा "मैं ब्रिटेन को एक इस्लामी राज्य के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं इस्लामी ध्वज को 10 डाउन स्ट्रीट में फहराते देखना चाहता हूँ।"

या फिर बेल्जियम मूल के एक इमाम की भविष्यवाणी कि "जैसे ही हम इस देश पर नियन्त्रण स्थापित कर लेंगे जो हमारी आलोचना करते हैं हमसे क्षमा याचना करेंगे, उन्हें हमारी सेवा करनी होगी। तैयारी करो समय निकट है।"

डेनियल इससे भी आगे बढ़कर एक ऐसी स्थिति का चित्र भी खींचते हैं जहाँ अमेरिका की नौसेना के जहाज यूरोप से यूरोपियन मूल के लोगों के सुरक्षित निकास के लिये दूर-दूर तक तैनात होंगे।

यूरोप में तेजी से बढ़ती मुस्लिम जनसंख्या के साथ इस महाद्वीप के साथ इनके लम्बे धार्मिक संबधों पर रोशनी डालते हुए डेनियल कहते है कि इस अवस्था में तीन रास्ते ही बचते हैं- सद्भावनापूर्वक आत्मसातीकरण, मुसलमानों को निकाला जाना या फिर यूरोप पर इनका नियन्त्रण हो जाना। इन परिस्थितियों के सर्वाधिक निकट स्थिति कौन सी है यह यूरोपवासियों को सोचना होगा।

प्रोफेसर थॉमस होमर-डिक्सन कहते हैं कि इस्लामिक शरणार्थी यूरोप के लिए बड़ी चुनौती है क्योंकि ये मध्य-पूर्व और अफ्रीका के अस्थिर इलाकों के करीब है। यहां की उठा-पटक और आबादी की भगदड़ का सीधा असर पहले यूरोप पर पड़ेगा। हम आतंकी हमलों की शक्ल में ऐसा होता देख भी रहे हैं। अमरीका, बाकी दुनिया से समुद्र की वजह से दूर है। इसलिए वहां इस उठा-पटक का असर देर से होगा। जब अलग-अलग धर्मों, समुदायों, जातियों और नस्लों के लोग एक देश में एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे, तो झगड़े बढ़ेंगे। पश्चिमी देशों में शरणार्थियों की बाढ़ आने के बाद यही होता दिख रहा है। वहीं कुछ जानकारों का ये भी कहना है कि हो सकता है पश्चिमी सभ्यताएं खत्म न हों लेकिन उनका रंग-रूप जरूर बदलेगा। लोकतंत्र, उदार समाज जैसे फलसफे मिट्टी में मिल जाएंगे। चीन जैसे अलोकतांत्रिक देश, इस मौके का फायदा उठाएंगे। ऐसा होना भी एक तरह से सभ्यता का पतन ही कहलाएगा। किसी भी सभ्यता की पहचान वहां के जीवन मूल्य और सिद्धांत होते हैं। अगर वही नहीं रहेंगे तो सभ्यता को जिंदा कैसे कहा जा सकता है? यह आज यूरोपियन लोगों के लिए सबसे बड़ा सवाल है।

- ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आयरलैंड स्कूल के संस्कृत विभागाध्यक्ष की बौद्धिक नसीहत

यह लेख उस भाषण का एक अंश है, जिसमें Rutger Korten host जो कि आयरलैंड के एक स्कूल में संस्कृत के विभाग अध्यक्ष हैं, उन्होंने वहां के पालकों के साथ एक मीटिंग में व्यक्त किए हैं।'; उल्लेखनीय है कि यूरोप के बहुत से विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन और पठन के लिए अलग से पीठ स्थापित है। इस लेख में कोर्तेन्होस्ट संस्कृत के बारे में विस्तार से बताते हैं और हमारी आँखें खुली की खुली रह जाती हैं... हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि जिस संस्कृत को भारत के नेहरूवादी कथित प्रगतिशील लोग, ''पिछड़ी हुई भाषा'' ''हिंदूवादी-ब्राह्मणवादी भाषा'' बताते हैं... जिस संस्कृत को यहाँ पैदा हुए नव-बौद्ध छाप ब्रेनवाश हो चुके लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं उस देवभाषा का यूरोप में कैसा सम्मान किया जाता है। पढ़िए इस भाषण के संक्षिप्त अंश...

देवियों और सज्जनों, हम यहां एक घंटे तक साथ मिल कर यह चर्चा करेंगे कि जॉन स्कॉट्स् विद्यालय में आपके बच्चे को संस्कृत क्यों पढ़ना चाहिए? मेरा दावा है कि इस घंटे के पूरे होने तक आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि आपका बालक भाग्यशाली है जो संस्कृत जैसी असाधारण भाषा उसके पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

सबसे पहले हम यह विचार करते हैं कि संस्कृत क्यों पढ़ाई जाए? आयरलैंड में संस्कृत को पाठ्यक्रम में शामिल करने वाले हम पहले विद्यालय हैं। ग्रेट ब्रिटेन और विश्व के अन्य हिस्सों में जॉन स्काट्टस् के 80 विद्यालय चलते हैं जहां संस्कृत को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। दूसरा सवाल है कि संस्कृत पढ़ाई कैसे जाती है? आपने ध्यान दिया होगा कि आपका बच्चा विद्यालय से घर लौटते समय कार में बैठे हुए मस्ती में संस्कृत व्याकरण पर आधारित गाने गाता होगा। मैं आपको बताना चाहूंगा कि भारत में अध्ययन करने के समय से लेकर आज तक संस्कृत पढ़ाने को लेकर हमारा क्या दृष्टिकोण रहा है। लेकिन पहला सवाल है संस्कृत क्यों? इसका उत्तर देने से पहले हमें संस्कृत के गुणों पर ध्यान देना होगा। अपनी आवाज की सुमधुरता, उच्चारण की शुद्धता और रचना के सभी आयामों में सम्पूर्णता के कारण यह सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है। यही कारण है कि अन्य भाषाओं की भांति मौलिक रूप से कभी भी इसमें पूरा परिवर्तन नहीं हुआ। मनुष्य के इतिहास की सबसे पूर्ण भाषा होने के कारण इसमें परिवर्तन की कभी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

यदि हम शेक्सपीयर की अंग्रेजी को देखें तो हमें पता चलेगा कि वह हमारे लिए आज कितनी अलग और कठिन है जबकि वह मात्र 500 वर्ष पुरानी अंग्रेजी है। हमें शेक्सपीयर और किंग जेम्स बाइबिल की अंग्रेजी को समझने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। इससे थोड़ा और पीछे चले जाएं तो केवल सात सौ साल पुरानी कैसर की पुस्तक पिलिग्रिम्स प्रोग्रेस में अंग्रेजी का कुछ भी ओर-छोर पता नहीं चलेगा। हम उस भाषा को आज अंग्रेजी की बजाय एंग्लो-सेक्शन कहते हैं। अंग्रेजी तो तब पैदा भी नहीं हुई थी।

सारी भाषाएं बिना किसी पहचान के बदलती रहती हैं। वे बदलती हैं क्योंकि वे दोषयुक्त हैं। आने वाले परिवर्तन वास्तव में विकृतियां हैं। विशाल रेडवुड वृक्ष के जीवनकाल की भांति ये भाषाएँ 7-8 सौ वर्षों में पैदा होती हैं और मर जाती हैं, क्योंकि इतनी विकृतियों के बाद उनमें कोई जीवंतता नहीं बची होती। आश्चर्यजनक रूप से संस्कृत इसका एकमात्र अपवाद है। यह अमर भाषा है। इसके गठन का संपूर्ण और सुविचारित होना ही इसकी निरंतरता का कारण है। इसके व्याकरण और शब्द-रचना की पहुंच से एक भी शब्द छूट नहीं पाया है। इसका अर्थ यह है कि हरेक शब्द के मूल का पता लगाया जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इसमें नए शब्द नहीं रचे जा सकते। जिस प्रकार हम अंग्रेजी में ग्रीक और लैटिन के पुराने विचारों का उपयोग करके नए शब्द गढ़ते हैं, जैसे कि टेली ''दूर'' विजन ''दर्शन'' और कम्प्यूट ''गणना'' आदि। इसी प्रकार संस्कृत में छोटे शब्दों और हिस्सों से बड़े जटिल शब्दों की रचना की जाती है तो एक मौलिक और अपरिवर्तनीय भाषा को जानने का क्या लाभ है? जैसेकि एक सदा साथ रहने वाले दोस्त का क्या लाभ है? वह विश्वसनीय होता है।

पिछली कुछ शताब्दियों में विश्व को संस्कृत के असाधारण गुणों का पता चला है और इसलिए अनेक देशों के विश्वविद्यालय में आपको संस्कृत विभाग मिलेगा। चाहे आप हवाई जाएं या कैंब्रिज या हार्वर्ड और यहां तक कि ट्रिनिटी विश्वविद्यालय, डबलिन, सभी में एक संस्कृत विभाग है। हो सकता है कि आपका बच्चा इनमें से किसी एक विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग का प्रोफेसर बने। हालांकि भारत इसका आदि देश है लेकिन आज संस्कृत की वैश्विक पूछ बढ़ी है। इस भाषा में उपलब्ध ज्ञान ने पश्चिम को आकर्षित किया है। चाहे वह आयुर्वेद हो या फिर योग, ध्यान की तकनीकी हो या फिर हिंदुत्व, बौद्ध जैसे अनेक व्यावहारिक दर्शन, इनका हम अपने यहां उपयोग कर रहे हैं। इनसे स्थानीय परम्पराओं और पंथों के साथ विवाद समाप्त करके समायोजन और जागरूकता फैलाते हैं।

संस्कृत में उच्चारण की शुद्धता अतुलनीय है। संस्कृत की शुद्धता अक्षरों के वास्तविक आवाज की संरचना और निश्चितता पर आधारित है। हरेक वर्ण के उच्चारण का स्थान निश्चित (मुख, नाक और गले में) और अपरिवर्तनीय है। इसलिए संस्कृत में अक्षरों को कभी भी समाप्त न होने वाला बताया गया है। इसलिए उच्चारण के स्थान और इसके लिए मानसिक और शारीरिक सिद्धता का पूर्ण नियोजन किया गया है। इस वर्णन को देखने के बाद हम विचार करें कि अंग्रेजी के अक्षरों ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी आदि में क्या कोई संरचना है सिवाय इसके कि यह ए से शुरू होती है।

आप कह सकते हैं कि ठीक है लेकिन हमारे बच्चे को एक और विषय और एक और लिपि क्यों पढना चाहिए। आज के पश्चिम जगत में उसे इससे किस प्रकार का लाभ पहुंच सकता है? पहली बात है कि संस्कृत के गुण आपके बच्चे में आ जाएंगे। वह शुद्ध, सुंदर और विश्वसनीय बन जाएगा। संस्कृत स्वयं ही आपके बच्चे या इसे पढने वाले किसी को भी अपनी अलौकिक शुद्धता के कारण ध्यान देना सिखा देगी। जब शुद्धता होती है तो आप आगे बढ़ता महसूस करते हैं। यह आपको प्रसन्न करता है। ध्यान की यह शुद्धता जीवन के सभी विषयों, क्षेत्रों और गतिविधियों चाहे आप विद्यालय में हों या उसके बाहर, में आपकी सहायता करती है। इससे आपका बच्चा अन्य बच्चों से प्रतियोगिताओं में आगे हो जाएगा। वे अधिक सहजता, सरलता और संपूर्णता में बातों को ग्रहण कर पाएंगे। इस कारण संबंधों, कार्यक्षेत्र और खेल, जीवन के हरेक क्षेत्र में वे बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे और अधिक संतुष्टि हासिल कर पाएंगे। आप जब पूरा प्राप्त करेंगे तो आप भरपूर आनंद भी उठा पाएंगे। संस्कृत के अध्ययन से अन्य भाषाओं को भी सरलता से सीखा जा सकता है क्योंकि सभी भाषाएं एक दूसरे से कुछ न कुछ लेती हैं। संस्कृत व्याकरण आयरिश, ग्रीक, लैटिन और अंग्रेजी में परिलक्षित होती है। इन सभी में

- शेष पृष्ठ 7 पर

.....कैंब्रिज या हार्वर्ड और यहां तक कि ट्रिनिटी विश्वविद्यालय, डबलिन, सभी में एक संस्कृत विभाग है। हो सकता है कि आपका बच्चा इनमें से किसी एक विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग का प्रोफेसर बने। हालांकि भारत इसका आदि देश है लेकिन आज संस्कृत की वैश्विक पूछ बढ़ी है। इस भाषा में उपलब्ध ज्ञान ने पश्चिम को आकर्षित किया है। चाहे वह आयुर्वेद हो या फिर हिंदुत्व, बौद्ध जैसे अनेक व्यावहारिक दर्शन, इनका हम अपने यहां उपयोग कर रहे हैं। इनसे स्थानीय परम्पराओं और पंथों के साथ विवाद समाप्त करके समायोजन और जागरूकता फैलाते हैं।...

बोध कथा

जिन खोजा तिन पाइयाँ

प्रजापति ने एक बार घोषणा की- ''यह अजर, अमर, पाप से रहित आत्मा ही जानने और खोजने की वस्तु है। जो इसको जान लेता है, वह सभी लोकों को प्राप्त और सभी इच्छाओं को पूर्ण कर लेता है।'' इस घोषणा को देव लोगों ने सुना और असुर लोगों ने भी। दोनों ने कहा-''जिस आत्मा को जान लेने से सभी लोक प्राप्त होते हैं, सभी इच्छाएँ पूर्ण होती है।, उसे जानना चाहिए अवश्य।''

देवताओं ने इन्द्र को अपना प्रतिनिधि बनाया, असुरों ने विरोचन को। दोनों को प्रजापति के पास भेजा कि ''जाओ, पूछकर आओ कि यह आत्मा क्या है?''

दोनों को प्रजापति के पास पहुँचे। दोनों ने प्रणाम करके कहा-''हम यह पूछने आये हैं कि आत्मा क्या है?''

प्रजापति ने मुस्कराते हुए कहा- ''पूछने आये हो तो मैं बताऊँगा, परन्तु पहले तुम्हें ब्रह्मचर्य धारण करके 32 वर्ष मेरे आश्रम में रहना होगा।''

दोनों ने ऐसा ही किया। 32 वर्ष व्यतीत हो गए। दोनों ने फिर पूछा- ''आत्मा क्या है?''

प्रजापति ने कहा-''शीशा लाओ या कटोरे में पानी भर लाओ। उसमें देखो। क्या देखते हो उसमें?''

दोनों ने पानी देखा। अपने-अपने शरीर की छाया को पानी में देखा। दोनों प्रसन्न हुए। विरोचन ने समझा कि शरीर ही आत्मा है। असुरों के पास जाकर बोला-''यह शरीर ही आत्मा है। इसे खिलाओ, पिलाओ, सजाओ, कपड़े पहनाओ। इसके लिए मकान बनाओ, मोटरें बनाओ, वायुयान बनाओ। इसी की पूजा करो। यही सब-कुछ है।''

परन्तु इन्द्र ने सोचा-प्रजापति तो आत्मा को अजर, अमर, अभय कहते हैं। यह शरीर तो बूढा भी होता है। इसे डर भी लगता है। फिर यह आत्मा कैसे हो सकता है? वह फिर प्रजापति के पास गये; बोले- ''मेरी तसल्ली नहीं हुई। यह शरीर आत्मा नहीं हो सकता। आप कृपा करके बताइये कि आत्मा क्या है?''

प्रजापति ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, ''विरोचन चला गया। उसकी असुर-बुद्धि है। वह वास्तविकता को कभी जानेगा नहीं, परन्तु यदि तुम आत्मा को जानना चाहते हो तो 32 वर्ष और मेरे आश्रम में ब्रह्मचर्य धारण करके रहना होगा।''

इन्द्र ने फिर आश्रम में रहना प्रारम्भ कर दिया। फिर 32 वर्ष बीत गये। प्रजापति ने पूरा रहस्य फिर भी नहीं बताया। 32 वर्ष और रहने के लिए कहा, फिर चौथी बार 32 वर्ष रहने को कहा। तब जाकर बताया कि आत्मा क्या है। तब इन्द्र को पता लगा कि शरीर आत्मा नहीं है। जो शरीर की पूजा करता है, वह विनाश की पूजा करता है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

संगठन से अछूते रह गए थे जिन पर लम्बे समय तक ध्यान नहीं दिया जा सका था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन मुख्यत: देश की आन्तरिक व उसके बाहर विदेशों में इस पुनीत कार्य का विस्तार करने, इसकी रक्षा करने के लिए हुआ है। सार्वदेशिक सभा इस उद्देश्य व कर्त्तव्य का निर्वाह पूर्ण मनोयोग से कर रही है।

प्रारंभिक क्रान्ति में हमारे पूर्व अधिकारी, विद्वानों का और संन्यासियों का इसमें अत्यन्त सराहनीय तथा बहुत कठिन परिश्रम रहा जिनके द्वारा एक सौ वर्ष से भी पूर्व देश, देशान्तरों में कई स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना की गई। कुछ वर्षों से इसमें कुछ शिथिलता आई किन्तु सन् 2006 के पश्चात् पुन: एक सक्रिय चेतना के साथ अधूरे कार्य को पूर्ण करने के संकल्प के साथ संगठन के कार्य को गति प्रदान की जा रही है। देश व विदेशों में संगठन के कार्यों से संगठन व सम्पर्क बढ़ा है। अमेरिका, लन्दन, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, सूरीनाम, गयाना, हॉलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, बर्मा, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिजी, नेपाल आदि देशो से बार बार सम्पर्क किया, वहाँ अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की योजना बनाई, आज उनसे जीवन्त सम्पर्क बना हुआ है, साहित्य सामग्री, सन्देश का सिलसिला निरन्तर बना हुआ है। इसके साथ ही देश के उस क्षेत्र को जहाँ साम्प्रदायिक विचार धाराएं धर्म परिवर्तन कराने में सक्रिय हैं, सत्य सनातन धर्म का प्रचार नहीं है तथा जहाँ आर्य समाज अभी तक नहीं हैं वहाँ आर्य समाज की स्थापना का विशेष ध्यान दिया गया।

आसाम, मिजोरम, नागालैण्ड, केरल जैसे स्थानों में जहाँ सनातन धर्मी तेजी से अल्प संख्यक होते जा रहे हैं वहाँ आर्य समाज की गतिविधियों में वृद्धि करने का प्रयास, सेवा, शिक्षा व वेद प्रसार के द्वारा जारी है।

सार्वदेशिक सभा की सन् 2016 की अन्तरंग बैठक में विस्तार समिति का गठन हुआ और इस हेतु एक निधि का भी निर्माण हुआ और प्रयास आरम्भ हुए। इसी तारतम्य में अण्डमान द्वीप, आर्य समाज की गतिविधि से पूर्णत: अछूता था, इसलिए वहाँ भी आर्य समाज का कार्य प्रारंभ करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास हेतु श्री आचार्य आनन्द पुरुषार्थी के द्वारा 7 दिन वहाँ जाकर भूमिका तैयार कर आर्य समाज की विचारधारा से अनेक व्यक्तियों को अवगत कराया गया। इसके पश्चात् निरन्तर सम्पर्क बना रहा। इस कार्य को अंजाम देने के लिए 4 मई से 8 मई तक 5 दिवसीय कार्यक्रम अण्डमान हेतु बनाया गया। जिसमें मैं, श्री विनय आर्य, श्री शिवकुमार मदान, श्री एस. के. कोचर वहाँ पहुंचे। अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क किया, चर्चा के दौरान काफी उत्साहवर्धक वातावरण निर्मित हुआ। फलस्वरूप 6 मई को आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण कदम के रूप में सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में एक बैठक हिन्दी साहित्य कला परिषद् के सभागार में सम्पन्न हुई जिसमें आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा बीज रूप मे रोपित कार्य को एक वैधानिक रूप प्रदान करते हुए सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर की एक संचालन समिति का गठन किया गया तथा उसकी घोषणा की गई। सभी ने मिलकर संकल्प लिया कि वेद की मान्यता के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए हम लोग इस टापू पर आर्यसमाज के संगठन का एक भाग बनकर कार्य करेंगे।

आर्य समाज तथा विद्यालय हेतु भवन निर्माण की योजना बनाई। अनेक स्थानों पर जाकर भवन हेतु भूमि देखी। सबसे प्रसन्नता की बात यह रही कि इस हेतु स्थानीय जो सदस्य संगठन से जुड़े, वे वहाँ के प्रतिष्ठित शिक्षित वर्ग के सदस्य हैं जिनमें वैदिक धर्म और आर्य समाज को समझकर एक उत्साह वर्धक वातावरण निर्मित हुआ। वहाँ के उप राज्यपाल श्री जगदीश मुखी जी से भेंट कर अपने मन्तव्य से अवगत कराया, वहाँ से भी यथायोग्य सहयोग का आश्वासन मिला।

महामहिम उपराज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी ने कहा महर्षि दयानन्द की विचार धारा मानव को वैज्ञानिक सोच प्रदान करती है। मैं आर्यसमाज के लिए जो भी आवश्यक कार्य होगा करने के लिए सदैव तत्पर रहूंगा।

वहाँ लम्बी चर्चा के पश्चात् संगठन

– शेष पृष्ठ 8 पर

दो दिन का हुआ सत्संग कार्यक्रम – श्री प्रकाश आर्य जी एवं श्री विनय आर्य के भजन और संगठनात्मक प्रवचन हुए

आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर में सामाजिक उत्थान के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा, ऐसा हो हम सबका संकल्प – प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

पहली आर्यसमाज के प्रधान पद का दायित्व लेना, मेरे लिए परम सौभाग्य – डॉ. सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी, प्रधान, आर्यसमाज

आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने की जिम्मदारी लेना मेरे लिए सौभाग्य की बात – सुरेश आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज

बैठक में पारित प्रस्ताव एवं लिए गए निर्णय

- 16 जुलाई, 2017 से नियमित सत्संग बैठक का आयोजन किया जाएगा।
- कार्यालय के स्थान के रूप में श्री शशि मोहन सिंह जी ने आर्यसमाज का अपना भवन बनने तक अपना स्थान देने का निश्चय किया।
- अस्थाई सत्संग सभा के लिए श्री अरुण श्रीवास्ताव ने भी अपना स्थान देने का प्रस्ताव किया।
- सभी ने अपना मासिक योगदान देने की घोषणा भी की।
- एक-एक सत्संग सभी प्रारम्भिक सदस्यों ने अपने-अपने निवास पर करवाने की सहमति दी।
- शीघ्र ही भवन लेने का कार्य आरम्भ किया जाएगा।
- एक कार्यक्रम नवम्बर के अन्त में किए जाने का विचार किया गया।

अन्दमान के विषय में महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल की खाड़ी में 604 द्वीपों का समूह है।
- हिन्दी मुख्य बोलचाल की भाषा है।
- अंग्रेजों ने इसकी स्थापना कैदियों की बस्ती के रूप में की थी। बाद में सैल्यूलर जेल के कारण प्रसिद्ध रहा।
- वीर सावरकर तथा अनेक आजादी के दीवानों की भूमि रही।
- अब तक वहां चिन्मया मिशन, निरंकारी मिशन, गुरुद्वारा, धन-धन सतगुरु, गायत्री परिवार, भारत स्वाभिमान, आर्ट आफ लिविंग तथा अन्य अनेक संस्थानों का कार्य आरम्भ हो चुका है।
- 70 प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या है। जिनमे मुख्य बंगला, तमिल, तेलगू और मलयालम भाषी हैं। ❖ 95 प्रतिशत साक्षरता दर है।
- सरकार के बाद सबसे अधिक शिक्षण संस्थान मिश्नरीज के हैं।

दिल्ली सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान में समूह गान प्रतियोगिता सफलतापूर्वक सम्पन्न

अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं से छात्रों को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है – श्री विजय भूषण

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित समूहगान प्रतियोगिता 25 अप्रैल 2017 को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्यसमाज न्यू मोती नगर में श्री सुरेश टंडन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने वर्ग-1 आर्य महापुरुषों पर आधारित भजन, वर्ग-2 में आर्य समाज/वेद पर आधारित गीत, वर्ग-3 में देश भक्ति गीत प्रस्तुत किए।

प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार में विद्यालय को शील्ड प्रदान की गई। सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र, कामिक्स व सत्यार्थ प्रकाश दिए गए। निर्णायक मंडल में श्री विजय भूषण जी, श्रीमती सुदेश आर्या जी व श्रीमती सुनीता बुग्गा जी ने निष्पक्ष निर्णय दिया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द प. स्कूल न्यू मोती नगर की प्रधानाचार्या श्रीमती इंदिरा छाबड़ा, श्रीमती सुरूचि टंडन, श्रीमती वीना आर्या एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा भी उपस्थित रहीं।

– संयोजक

समूह गान प्रतियोगिता परिणाम – वर्ग 1	वर्ग – 2	वर्ग -3
प्रथम – एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग	**प्रथम** – दयानन्द माडॅल स्कूल, माडॅल टाऊन	**प्रथम** – एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल – पंजाबी बाग
द्वितीय – आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार	**द्वितीय** – आर्य माडॅल स्कूल, आदर्श नगर	**द्वितीय** – रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार
तृतीय – आर्य माडॅल स्कूल, आदर्श नगर	**तृतीय** – एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग	**तृतीय** – दयानंद आदर्श विद्यालय – तिलक नगर
सांत्वना – महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोती नगर	**सांत्वना** – रघुमल आर्य क.सी. सै. स्कूल, राजा बाजार	

मई-जून-जुलाई, 2017 में आयोजित होने वाले उत्सव, कार्यक्रम एवं शिविर

यज्ञ की विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताएं तथा यज्ञ विज्ञान के सामान्य ज्ञान हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

23 मई 2017 से 27 मई 2017

समय : प्रतिदिन प्रात: 7 से 8:30 बजे **स्थान :** एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-27

आर्यजन परिवार सहित आमन्त्रित हैं। प्रशिक्षण शिविर में न्यूनतम पति-पत्नी दोनों का सम्मिलित होना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए सह संयोजक श्री नीरज आर्य जी (मो.9810102856) पर सम्पर्क करें। - *सतीश चड्ढा, मुख्य संयोजक*

नि:शुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

29 मई से 4 जून, 2017 गुरुकुल पौंधा, देहरादून

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 मई से 4 जून 2017 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 700/- व लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 28 मई 2017 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 4 जून को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखबीर सिंह, शिविर संयोजक,
मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मो. 09350502175, 09540012175

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 9 जुलाई, 2017 को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का वार्षिकोत्सव

आधुनिक भारत - ले चलें शिखर की ओर

22 जुलाई, 2017 : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे

- सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

21 मई से 28 मई 2017 डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-92

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में वार्षिक विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 21 मई से 28 मई, 2017 तक डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-110092 में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- ***श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372***

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

28 मई से 5 जून 2017

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्म रक्षण शिविर भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल, रिवाड़ी महाविद्यालय, गांव जसात, तहसील पटौदी, गुरुग्राम (हरियाणा) में 28 मई से 5 जून 2017 को प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमायति जी की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए श्रीमती अंजू बजाज, सह संचालिका (9810563979)/श्रीमती आरती खुराना (9910234595) से सम्पर्क करें। - ***मृदुला चौहान, संचालिका***

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

1 जून से 11 जून 2017 डी.ए.वी. स्कूल, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 1 जून से 11 जून, 2017 तक डी.ए.वी. स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.) में आयोजित किया जा रहा है। सान्निध्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं मार्गदर्शक डॉ. स्वामी देवव्रत सस्वती , प्रधान सेनापति, सार्वदेशिक आर्य वीर दल होंगे। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

5 से 20 जून 2017 गुरुकुल पौंधा, देहरादून

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड) में 5 से 20 जून 2017 को स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, 2 फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। प्रवेश शुल्क 500 रु., पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से प्रदान की जाएंगी। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य धनञ्जय, शिविर संयोजक (9411106104)

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन

अध्यापक-अध्यापिका गोष्ठी

29 जून, 2017 (वीरवार)	1 जुलाई, 2017 (शनिवार)
रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली	एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली
प्रात: 9 से 1 बजे	प्रात: 9 से 1 बजे

सभी विद्यलायों के अध्यापकगण अपनी सम्बन्धित संगोष्ठी में भाग लेने के लिए अवश्य पहुंचे। - सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

36वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

14 मई, 2017 से 28 मई, 2017

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
14 मई सायं : 6 बजे	28 मई प्रात: 10 बजे

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक **महाशय धर्मपाल** प्रधान, **धर्मपाल गुप्ता** व.उ. प्रधान, **जोगेन्द्र खट्टर** महामन्त्री (9810040982), **योगेश आर्य** कोषाध्यक्ष

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Game of Numbers

The Vedas inspired our ancestors to develop the science of mathematics which mostly depends on numericals. The Vedic style of expression is cryptic in nature capable of linking to cosmic and ephemeral planes. Verse 2, Chapter XVIII reads: "O Adorable Lord, these are my coveted milch cows; may these grow to ten (dasa) from one (eka); from ten these may bcome hundred (sata), from hundred a thousand (sahasra); from a thousand ten thousand (ayuta); from ten thousand a hundred thousand (niyuta); from a hundred thausand a million (prayuta); and ten millions (arbuda) and hundred millions (nyarbuda) and a billion (samudra) and billions (madhya); and a hundred billions (anta) and a trillion (parardha); these be my coveted milch cows in the next world as well as in the present one."

इमा मेऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्द्धश्चैता मेऽअग्नऽइष्टका धेनवाः सन्त्वमुत्रा मुष्मिँल्लोके।। (Yv. xxvii.2).

Ima me agna istaka dhenavah santveka ca dasa ca dasa ca satam ca satam ca sahasram ca sahasram cayutam cayutam ca niyutam ca niyutam ca prayutam carbudam ca nyarbudam

ca samudrasca madhyam cantasca parardhascaita me agna istaka dhenavah santvamutramusminlloke..

Gayatri - The mahamantra

"May we imbibe in ourselves the choicest effulgence of the divine Creator so that He evokes our intellect". This is the essence of the great Gayatri Mantra. Out of twenty thousand and odd verses revealed in all the four Texts, one single verse stands prominent and significant. It is called ""Maha mantra""- the Great Verse. The seers of the Upanishads describe it as the "Soul of the Veda". whereas the Vedas themselves glorify it as "Vedamata". Its thought- provoking chanting protects the chanter from all evils; therefore it is known as "Gayatri". Here the devotee eulogizes the Supreme Soul in the name of "Savita", the Foremost Inspirer, So the verse is also known as "Savitri".

Pranava, Vyahrti and Gayatri - these form its three parts. Pranava or Om is the true and comprehensive name of the Almighty God; all other names are mere adjectives of OM, each denoting one of His attributes. OM in brief, means All-pervading and All-protecting. The second part is Vyahrti comprising of Bhuh, Bhuvah and Svah-Being, Becoming and Bliss - another way of addressing the Lord. The last part consisting of three steps each with eight syllables is a harmonious combination of Stuti (praises), Prarthana (prayer) and Upasana (meditation) singularly seen in this verse. The word "Bhargah" in the verse, points to divine splendour on which the devotee meditates.

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्।।

(Yv. xxxvi.3)

Bhurbnuvah svah. tat saviturvarenyam bhargo devasya dhimahi. dhiyo yo nah pracodayat..

Exponent of the Vedas

To interpret th Rgveda, the poetic verses of praise, take the shelter of speech. You will gradually be adept in the Rks by understanding the inner meaning of the syllables and significance of accents. To know the Yajurveda, the prose verses depicting excellent actions in life, take refuge of the mind. Discipline your mental faculty to enjoy a life of activity but with detachment. To commune with the Samaveda, the lyrical songs of devotion, strengthen your vital breath. Evoke your spiritual ecstasy by training it properly. Let the fluid of ecstasy trickle in drops and gradually flow in stream. To interpret the Atharva Veda, acquire the vigour of hearing from expert teachers of science both physical and metaphysical. O Merciful Protector, pray bestow on us the formidable treasures of speech, thought, breath and hearing.

The enlightened one says, "I am the Rk, I am the Yajuh, I am the Sama. "He thus becomes an erudite scholar inspiring all the five categories of institutes namely the self, the family, the society, the nation and the world.

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये।

वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।।

(Yv. xxxvi.1)

Rcam vacam prapadye mano yajuh prapadye sama pranam prapadye caksuh srotram prapadye.

vagojah sahaujo mayi pranapanau.

To be Conti....

Contact No. 09437053732

वैदिक मन्त्रों एवं 21 कुण्डीय यज्ञ के साथ नये सत्र का शुभारम्भ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा में 6 अप्रैल को नये सत्र का शुभारम्भ वैदिक मंत्रों एवं 21 कुण्डीय यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में विद्यालय के सभी विद्यार्थियों एवं कक्षाअध्यापकों ने अलग-अलग हवन कुण्ड पर वैदिक ऋचाओं के साथ धर्मशिक्षक श्री शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया। मुख्य अतिथि उपाध्यक्ष एल.एम.सी. श्री एम. एल. पटौदी एवं विशिष्ट अतिथि श्री अर्जुनदेव चढ्ढा एवं स्कूल प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम के साथ यज्ञ की आहुतियां प्रदान कीं। श्रीमती सरिता रंजन ने विद्यार्थियों को सृजनशील और कुछ नया सोचने की प्रेरणा दी। -**प्राचार्या**

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 23

गतांक से आगे....

संस्कृत के कुछ अपभ्रंश शब्द अंग्रेजी में

मनु=मैन
पितर = फादर
मातर = मदर
भ्रातर = ब्रदर
स्वसा = सिस्टर
दुहितर = डाटर
सुनु = सन
विधवा = विडव्
अहम् = आई एम
मूष = माउस
ऋत = राइट
स्वेद = स्वेट (पसीना)
अंतर = अंडर (नीचे, भीतर)
द्यौपितर = जुपिटर (आकाश, बृहस्पति)
पशुचर = पाश्चर (चरवाहा)
दशमलव = डेसिमल
ज्यामिति = ज्योमेट्री
पथ = पाथ (रास्ता)
नाम= नेम
वमन = vomity=उल्टी करना
द्वार = डोर (door)
हृत = हार्ट (heart)
द्वि = two
त्रि = three
पञ्चि = penta = five
सप्त = hept = seven
अष्ट = oct = eight
नव = non = nine
दक्ष = deca = ten
दन्त = dent
उष्ट्र = ostrich
गौ = cow
गम् = go
स्था = stay
अक्ष = axis
सप्त अम्बर = september
अष्त अम्बर= october
नबं अम्बर= november
दश अम्बर= december

इससे यह भी पता चलता है कि दिसम्बर 12वाँ नहीं 10वाँ महीना है जो हिन्दी महीनों के अनुरूप है।

एक और शब्द है,

रथ = rad (जर्मन में पहिये को rad कहते हैं) इसी से radius बना है।

संस्कृत ही मूल भाषा है। अन्य सभी उसके अपभ्रंश एवं विकृत रूप हैं।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

सबसे पहले मैं इस परीक्षा में बैठूंगा

शाहपुरा राजस्थान के शासक सर नाहरसिंह ने एक दिन अपने ऋषिभक्त राज्य कर्मचारी महाशय देवकृष्णजी से पूछा कि शाहपुरा में खरे व खोटे आर्यसमाजी का कैसे पता लगे?

महाशयजी ने झट से उत्तर दिया कि इसका उपाय तो बड़ा सरल है। महाराज ने कहा, ''बताइए क्या उपाय है?''

महाशय देवकृष्णजी ने कहा, ''आप कुछ दिन के लिए घोर सनातनी बन जाएँ। जितने आर्यसमाजी हैं, उन्हें राज्य के कार्य-व्यवहार से पृथक् कर दीजिए। उनपर रोष भी प्रकट करें। उस अवस्था में खरे, खोटे, असली-नकली आर्य समाजी का पता चला जाएगा।''

महाराज नाहरसिंह बोले, ''तो फिर आपको भी सेवा से पृथक् होना पड़ेगा।''

महाशय देवकृष्ण ने कहा, ''मैं सबसे पहले इस परीक्षा में बैठने को तैयार हूँ।''

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

महात्मा हंसराज जयन्ती के अवसर पर जयपुर (राजस्थान) में आयोजित एक समारोह में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को वैदिक विद्वान के रूप में समिति के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी ने सम्मानित किया। सम्मान रूप में उन्हें शाल, प्रशस्ति पत्र, तुलसी की पौध एवं 31 हजार रुपये की मानराशि प्रदान की गई। समारोह में हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी एवं पूर्व राज्यपाल श्री टी.एन. चतुर्वेदी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

- डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

युवा चरित्र निर्माण शिविर

दयानन्द मठ, दीनानगर में दिनांक -1 से 8 जून 2017 तक युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर की अध्यक्षता स्वामी सदानन्द जी महाराज करेंगे। शिविर में शारीरिक प्रशिक्षण (योग, व्यायाम, जूडो-कराटे, लाठी इत्यादि) एवं विभिन्न विषयों पर बौद्धिक प्रवचन आयोजित किये जाएंगे। शिविर शुल्क मात्र 100 रुपये।

अधिक जानकारी के लिए मो. 09417220110, 8558831000 पर सम्पर्क करें।

- आचार्य

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित धनश्री (असम), बामनिया (म.प्र.) तथा अन्य स्थानों पर संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों के लिए प्रबन्धकों, सहायकों, एवं केयरटेकरों की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी, पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@ yahoo.com पर ई मेल करें या चेयरमैन, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पते पर भेजें। - ***महामन्त्री***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज नांगलराय नई दिल्ली

प्रधान - डॉ. जयदेव वर्मा
मंत्री - श्री भगवान दास
कोषाध्यक्ष - श्री प्रतिपाल सिंह

आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-1, नई दिल्ली

प्रधान - श्री प्रेम कुमार सचदेवा
मंत्री - श्री जीवनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री विजय जिन्दल

समर्पण दिवस सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा हंसराज जन्मोत्सव 22 अप्रैल 2017 को समर्पण दिवस के रूप में उत्साह पूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी थे। आचार्य देवव्रत जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि 'आर्य समाज और डी ए वी संसार का कायाकल्प कर सकते हैं।' महात्मा हंसराज जी के जीवन पर आधारित संगीतमय नृत्यनाटिका आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रही। *- मन्त्री*

'पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए...'

गीत को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

AIRTEL	DIAL 543211 4684461	Idea Set Tune	DIAL 56789 5021683
BSNL E & S	SMS BT 5021683 to 56700	BSNL N & W	SMS BT 804061 to 56700
Vodafone	SMS BT 5021683 to 56789	TATA	SMS CT 5021683 to 543211
MTNL	SMS PT 5021683 to 56789	AIRCEL	SMS DT 804061 to 53000
Reliance Set Tune	SMS CT 6312078 to 51234		

पृष्ठ 3 का शेष

आयरलैंड स्कूल के संस्कृत .....

संपूर्ण संस्कृ त व्याकरण का कुछ हिस्सा है। कुछ में व्याकरण कुछ अधिक विकसित हो गया है लेकिन उनमें भी संस्कृत व्याकरण का कुछ हिस्सा पाया जाता है और जो अपने आप में परिपूर्ण होता है।

संस्कृत हमें सिखाती है कि भाषा व्यवस्थित होती है और नियमों का पूरी तरह पालन करती है जिन्हें प्रयोग करने पर हमारे बच्चे भी विकसित होते हैं। इसका अर्थ है कि वे अस्वाभाविक रूप से शुद्ध, निश्चित और भाषा में साफ अंतर्दृष्टि वाले हो जाते हैं। सभी भाषाओं की माता संस्कृत से वे अच्छी तरह बोलना सीख जाते हैं। जो अच्छे से बोलना जानते हैं, वे दुनिया पर राज करते हैं। यदि आपके बच्चे एक चैतन्य भाषा में अभिव्यक्त करना सीख पाएंगे तो वे अगली पीढ़ी का नेतृत्व कर पाएंगे। वेदों और गीता के रूप में संस्कृत का साहित्य दुनिया का सबसे व्यापक साहित्य है। विलियम बटलर यीट्स द्वारा किया गया उपनिषदों के भाष्य ने दुनिया के लोगों को वैश्विक धर्म की अनुभूति कराई है। इन पुस्तकों को सीधा पढ़ना उनके अनुवादों को पढ़ने से कहीं बेहतर होगा क्योंकि अनुवाद मूल से बेहतर नहीं होता। आज मजहबी विचारों को कम समझने और अपरिपक्व मजहबी विचारों के कारण पूरी दुनिया में मजहबी मतांधता और कट्टरता बढ़ रही है, ऐसे में वैश्विक धर्म के बारे में एक साफ जानकारी का होना आवश्यक है।

वैश्विक, समन्वयकारी और सीधी-सरल सच्चाइयों को अभिव्यक्त करने में संस्कृत आपके बच्चे की सहायता कर सकती है। परिणामस्वरूप आप अपने अभिभावकत्व का सही ढंग से निर्वहन कर पाएंगे और दुनिया अधिक सौहार्द्रपूर्ण, मानवीय और एकात्म समाज के रूप में इसका लाभ उठाएगी। संस्कृत की तुलना एक चौबीस घंटे साथ रहने वाले शिक्षक से कर सकते हैं। शेष भाषाएं कुछ ही समय साथ देती हैं। मुझ पर संस्कृत का पहला प्रभाव एक यथार्थवादी आत्मविश्वास के रूप में दिखा। दूसरे, मैं अधिक सूक्ष्मता से और सावधानीपूर्वक बोलने लगा हूँ। मेरी एकाग्रता और ग्राह्यता बढ़ गई है। हमने संस्कृत पाठ्यक्रम को पिछले वर्ष सितम्बर में शुरू किया है और इससे हमारे छात्रों के चेहरे पर मुस्कान ला दिया है। यह एक सुखद परिवर्तन है। मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि आपके बच्चों को हम एक संपूर्ण, सुगठित और आनंददायी पाठ्यक्रम उपलब्ध करा पा रहे हैं।

हम अपने 500 वर्ष के पुनर्जागरण के चक्र को देखें। अंतिम यूरोपीय पुनर्जागरण में तीन चीजों का विकास हुआ कला, संगीत और विज्ञान जिससे हमने आज की दुनिया का निर्माण किया है। आज हम नए प्रेरक समय में हैं और नए पुनर्जागरण की शुरुआत हो रही है। यह पुनर्जागरण भी तीन बातों पर आधारित है अर्थ-व्यवस्था, कानून और भाषा। भाषा को और अधिक वैश्विक होना होगा ताकि हम सेकेंडों में एक-दूसरे से संपर्क कर सकें। अमेरिका के स्पेस कार्यक्रम नासा आईटी और आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के विकास के लिए संस्कृत की ओर ही देख रही है। जॉन स्कॉट्ट्स् के छात्रों का अनुभव है कि संस्कृत उनके मस्तिष्क को तेज, साफ और उर्वर बनाती है। यह उन्हें शांत और खुश करती है। यह हमें बड़ा सोचने के लिए प्रेरित करती है। संस्कृत हमारी जीभ को साफ और लचीली बनाती है जिससे हम किसी भी भाषा का उच्चारण कर सकते हैं। अंत में मैं नासा के रिक ब्रिग की एक बात उद्धरित करना चाहूंगा। संस्कृत पूरे ग्रह की भाषा बन सकती है यदि इसे उत्साहवर्धक और आनंददायी तरीके से पढ़ाया जाए।

काश... यह बात भारत के कथित "प्रगतिशील बुद्धिपिशाच" आज से साठ वर्ष पहले समझ जाते.... तदनुसार पाठ्यक्रम में बदलाव किए जाते, भारतीय बच्चों को इस भाषा में निपुण बनाया जाता और फिर वेदों पर रिसर्च किया जाता... लेकिन चूंकि नेहरू के दिमाग में अंग्रेज और अंग्रेजी घुसी हुई थी, सेकुलरिज्म और प्रगतिशीलता की नौटंकी भी जरूरी थी.. हिन्दुओं और ब्राह्मणों को कोसना भी जरूरी था... इसलिए संस्कृत को "खलनायक" बनाया गया... लेकिन यूरोप वाले समझदार निकले... जिस भाषा को दुनिया मान रही है, उसे हमने कक्षा पांचवीं तक सीमित कर दिया है।

-साभार : संदीप उपाध्याय

Written by:& Rutger Kortenhost

शोक समाचार

श्री प्रकाश बसन्त को मातृशोक

आर्यसमाज दक्षिण अफ्रीका के कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश बसन्त जी की पूज्यमाता श्रीमती दयावती बसन्त जी का 9 मई, 2017 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 10 मई, 2017 को किया गया।

पं. जस्टिस देवेन्द्र पथिक को भातृशोक

आर्यसमाज क्वींसलैंड ऑस्ट्रेलिया के सदस्य श्री पं. देवेन्द्र पथिक जी के भ्राता श्री धीरेन्द्र पथिक जी का मेलबर्न में 5 मई, 2017 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अतः उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9650183337
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

सोमवार 8 मई, 2017 से रविवार 14 मई, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11/12 मई, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 मई, 2017

पृष्ठ 4 का शेष

का गठन कर दिया गया, इसके प्रधान डॉ. सुरेश चतुर्वेदी, प्रो. सुरेश आर्य (मन्त्री), डॉ. रविशंकर पाण्डेय (कोषाध्यक्ष), इंजीनियर शशिमोहन सिंह (उपमन्त्री) एवं डॉ. अरूण श्रीवास्तव (उप प्रधान)। डॉ. कांडी मुथ्थू को सम्पर्क अधिकारी के रूप में, श्री विकास पटेल (सी.ए.), डॉ. चन्द्रा श्रीवास्तव, श्री सत्यव्रत दुबे (सी.ए.) आडीटर, डॉ. रेखा वैद्य (पुस्तकाध्यक्ष) प्रोफेसर वाचस्पति, अशोक कुमार (सी.एम.ओ.), श्री हरिनारायण अरोरा (पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष) संरक्षक व अन्य सदस्य मनोनीत किए गए हैं। (नोट - यह सूची पूरी नहीं है। अगले अंक में पूरी सूची प्रकाशित की जाएगी।) निश्चित ही कुछ ही वर्षों में यहाँ आर्य समाज इस क्षेत्र का एक प्रसिद्ध व सक्रिय संगठन के रूप में पहचान बनायेगा।

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा ने सन्देश देते हुए कहा कि पोर्ट ब्लेयर में आर्यसमाज की स्थापना होना सबके लिए गौरव की बात है।

श्री विनय आर्य जी ने महाशय धर्मपाल जी का सन्देश पढ़कर सुनाते हुए कहा आर्यसमाज के विस्तार के लिए हर सम्भव सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर हैं, ऐसा उन्होंने आश्वासन दिया है। इस अवसर पर श्री हरिनारायण अरोड़ा जी ने कहा कि आज से 60 वर्ष पूर्व उर्दू का सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मैं महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा की ओर प्रेरित हुआ और अब आर्य समाज के संगठन की जो नींव पोर्ट ब्लेयर में रखी गई है उसको आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास करूंगा।

डॉ. सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी जी ने कहा कि पोर्ट ब्लेयर में पहली आर्यसमाज के प्रधान पद की जिम्मेदारी लेना मेरे लिए परम सौभाग्य है।

श्री सुरेश आर्य जी ने कहा कि आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने की जिम्मदारी लेना मेरे लिए सौभाग्य है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर में सामाजिक उत्थान के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा, ऐसा हम सबका संकल्प होना चाहिए।

परमात्मा की कृपा से निकट भविष्य में ही गोवा में जहाँ अभी तक आर्य समाज की शाखा प्रारंभ नहीं हुई है वहाँ भी सम्पर्क किया जा रहा है और यथाशीघ्र पुनः एक शुभ समाचार आप तक पहुंचेगा, ऐसा विश्वास है।

उपरोक्त समस्त कार्यों के लिए निष्काम व समर्पित, व्यक्तित्व के रूप में सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य का पूर्ण सहयोग, संबल, मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। यह परम सौभाग्य है कि भामाशाह के रूप में स्थापित व्यक्तित्व महाशय धर्मपालजी का बहुत बड़ा आशीर्वाद संगठन को प्राप्त है। उनकी प्रेरणा और प्रबल इच्छा आज भी यही है कि जहाँ-जहाँ आर्य समाज नहीं हैं, महर्षि दयानन्द की विचारधारा नहीं पहुंची, वहां-वहां आर्य समाजें प्रारंभ हो। अण्डमान के संबंध में भी उनकी प्रबल भावना ऐसी ही रही। आर्य जगत ऐसे आशीर्वाददाता का हृदय से आभार व्यक्त करता है। - ***प्रकाश आर्य, सभामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली***

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश
(18 भाषाओं में)
अब सीडी में उपलब्ध

मूल्य मात्र 30/- रुपये
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
फोन. 23360150, 9540040339

प्रतिष्ठा में,

क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की गोष्ठियों का आयोजन क्षेत्रवार निम्न प्रकार किया गया है। समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारीगण अपने क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य पहुंचे। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। शेष स्थान बाद में सूचित किए जाएंगे।

पश्चिम दिल्ली-1	पश्चिम दिल्ली-2	
आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी	आर्यसमाज कीर्ति नगर	
रविवार : 25 जून, 2017	रविवार : 2 जुलाई, 2017	
पूर्वी दिल्ली	**दक्षिण दिल्ली**	**उत्तरी दिल्ली**
आर्यसमाज सूरजमल विहार	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2	आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स
रविवार : 9 जुलाई, 2017	रविवार : 23 जुलाई, 2017	रविवार : 16 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह